

---

# Suvarnamala Stutih

सुवर्णमालास्तुतिः

## Document Information

---

Text title : Suvarnamala Stutih

File name : suvarNamaalaa.itx

Category : varNamALA, shiva, shankarAchArya

Location : doc\_shiva

Author : Traditional

Transliterated by : Subramanian Ganesh, NA

Proofread by : NA, Jagannadha Rao, Rajani Arjun Shankar

Latest update : August 20, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 21, 2024

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Suvarnamala Stutih

---

### सुवर्णमालास्तुतिः

---



अथ कथमपि मद्भ्रसनां त्वद्गुणलेशैर्विशोधयामि विभो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ १ ॥

आम्नाएडलमदम्भाएडनपण्डित तण्डुप्रिय याएडीश विभो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २ ॥

ठभयर्माम्बर शम्बररिपुवपुरपडरणोज्ज्वलनयन विभो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३ ॥

ठश गिरीश नरेश परेश मडेश भिलेशयभूषण भो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४ ॥

उभया दिव्यसुमङ्गलविग्रहयाविङ्गितवामाङ्ग विभो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ५ ॥

उरीकुरु मामज्ञामनाथं दूरीकुरु मे दुरितं भो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ६ ॥

ऋषिवरमानसदंस यरायरजनस्थितिलयकारण भो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ७ ॥

ऋक्षाधीशकिरीट मडोक्षाडुठ विधृतरुद्राक्ष विभो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ८ ॥

लवर्णद्वन्द्वमवृन्तसुकुसुममिवाङ्घ्रौ तवार्पयामि विभो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ९ ॥

ऐकं सदिति श्रुत्या त्वमेव सदसीत्युपास्मडे मूड भो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ १० ॥

ऐक्यं निजभक्तेभ्यो वितरसि विश्रम्भरोऽत्र साक्षी भो ।  
साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ११ ॥

ओमिति तव निर्दोषी मायास्माकं मृडोपकर्त्री भो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ १२ ॥  
 औदास्थं स्फुटयति विषयेषु द्विगम्भरता य तवैव विभो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ १३ ॥  
 अन्तःकरणविशुद्धिं भक्तिं च त्वयि सतीं प्रदेहि विभो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ १४ ॥  
 अस्तोपाधिसमस्तव्यस्तै रुपैर्जगन्मयोऽसि विभो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ १५ ॥  
 करुणावरुणालय मयि दास उदासस्तवोचितो न हि भो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ १६ ॥  
 भलसखवासं विघटय घटय सतामेव सङ्गमनिशं भो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ १७ ॥  
 गरलं जगद्गुणकृतये गिलितं भवता समोऽस्ति कोऽत्र विभो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ १८ ॥  
 धनसारगौरगात्र प्रयुरजटाजूटभङ्गगङ्गा विभो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ १९ ॥  
 ज्ञानिः सर्वशरीरेष्वभ्युत्ता या विभाति सा त्वं भो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २० ॥  
 यपलं मम हृदयकपिं विषयद्रुयरं दृढं भयान विभो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २१ ॥  
 छाया स्थाणोरपि तव तापं नमतां हरत्यहो शिव भो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २२ ॥  
 जय कैलासनिवास प्रमथगणाधीश भूसुरार्थित भो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २३ ॥  
 जगत्कजिङ्गिण्जगत्तुलितकशब्दैर्नटसि मडानट भो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २४ ॥  
 ज्ञानं विक्षेपावृत्तिरहितं कुरु मे गुरुस्त्वमेव विभो ।  
 साम्ब सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २५ ॥

टङ्कारस्तव धनुषो दलयति हृदयं द्विषामशान्तिरिव भो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २६ ॥  
 षाड्भूतिरिव तव माया बहिरन्तः शून्यरूपिणी भवतु भो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २७ ॥  
 उम्बरमम्बुरुडामपि दलयत्यनघं त्वद्दृष्टियुगलं भो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २८ ॥  
 ढक्काक्षसूत्रशूलद्रुडिणकरोटीसमुल्लसत्कर भो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ २९ ॥  
 णाकारगर्भिणी येच्छ्रुमदा ते शरगतिर्नृणांमिह भो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३० ॥  
 तव मन्वतिसञ्जपतः सद्यस्तरति नरो हि भवाब्धिं भो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३१ ॥  
 थूट्टारस्तस्य मुषे भूयात्ते नाम नास्ति यस्य विभो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३२ ॥  
 द्यनीयश्च दयालुः कोऽस्ति मदन्यस्त्वदन्ये षं वद भो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३३ ॥  
 धर्मस्थापनदक्ष त्र्यक्ष गुरो दक्षयज्ञशिक्षक भो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३४ ॥  
 ननु ताडितोऽसि धनुषा लुब्धधिया त्वं पुरा नरेण विभो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३५ ॥  
 परिमातुं तव मूर्तिं नालमजस्तत्परात्परोऽसि विभो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३६ ॥  
 इलमिह नृतया जनुषस्त्वत्पदसेवा सनातनेश विभो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३७ ॥  
 बलमारोग्यं यायुस्त्वद्गुणरुचितां चिरं प्रदेहि विभो ।  
 साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३८ ॥  
 भगवन् भर्गा भयापह भूतपते भूतिभूषिताङ्ग विभो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ३८ ॥

मडिमा तव न छि माति श्रुतिषु छिमानीधरात्मजाधव भो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४० ॥

यमनियमादिभिरङ्गैर्यमिनो लृटये भजन्ति स त्वं भो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४१ ॥

रज्ज्वावहिरिव शुक्तौ रज्ज्वात्तमिव त्वयि जगन्ति भान्ति विभो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४२ ॥

लब्ध्वा भवत्प्रसादाय्यङ्कं विधुरवति लोकमभिलं भो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४३ ॥

वसुधातद्धरतच्छयरथमौर्वीशरपराकृतासुर भो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४४ ॥

शर्व देव सर्वोत्तम सर्वदं दूर्वृत्तगर्वलरणा विभो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४५ ॥

षड्रिपुषडूर्मिषड्विकारलर सन्भुष षण्णभुषणक विभो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४६ ॥

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्मेत्येतल्लक्षणलक्षित भो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४७ ॥

डाडालूडूभुषसुरगायकगीतापदानपद्य विभो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४८ ॥

णादिर्न छि प्रयोगस्तदन्तमिह मङ्गलं सदाऽस्तु विभो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ४९ ॥

क्षणाभिव द्रिवसात्रेष्यति त्वत्पदसेवाक्षणात्सुकः शिव भो ।

साम्भ सदाशिव शम्भो शङ्कर शरणां मे तव यरणायुगम् ॥ ५० ॥

॥ एति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य

श्रीशङ्करभगवतः कृतौ सुवर्णामालास्तुतिः सम्पूर्णा ॥

Suvarṇamālā Stutiḥ सुवर्णामाला स्तुतिः composed by ĀdiŚaṅkarācārya आदिशङ्कराचार्य  
comprises of 50 śloka-s श्लोकः eulogizing Śiva शिव; with each of the shloka in the

sequence beginning with the successive Varṇa वर्ण from the chosen set of the Devanāgarī  
Varṇamālā देवनागरी वर्णमाला starting from letter अ through क्ष.

Encoded partial by Subramanian Ganesh, extended NA

Proofread by NA, Jagannadha Rao, Rajani Arjun Shankar

---



*Suvarnamala Stutih*

pdf was typeset on August 21, 2024



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

